



# पत्र-पुष्प



## “ब्रह्मा बाप समान अव्यक्ति फीचर्स बनाने के लिए अपनी नेचर का परिवर्तन करो” दादी जी की शुभ प्रेरणायें 21-10-22

परमप्यारे अव्यक्तमूर्त मात पिता बापदादा के अति स्नेही, अपने दिव्य संस्कारों से नया संसार बनाने वाली निमित्त टीचर्स बहनें तथा देश विदेश के सर्व बाबा के नूरे रत्न, ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें, ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - आप सभी प्राणप्यारे अव्यक्त बापदादा से मंगल मिलन मनाने की इस अलौकिक सीज़न की रिमझिम के समाचार सुनते, बापदादा की मधुर शिक्षाओं को रिवाइज़ करते, उमंग-उत्साह के पंखों से उड़ते हुए बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनने का तीव्र पुरुषार्थ कर रहे होंगे। बाबा कहे बच्चे अब साथ चलना है तो समान बनो। जो भी बोझ वा बंधन हैं उन्हें बाप हवाले कर डबल लाइट फरिश्ता भव के वरदानी बनो। बापदादा हर कारण का निवारण दो बातों में ही सुनाते - एक - प्वाइंट रिवाइज़ करने के साथ उसे रियलाइज़ करो और उस प्वाइंट का स्वरूप बनो। 2- और कोई पुरुषार्थ भले नहीं करो लेकिन हर एक को दुआयें दो और सबकी दुआयें लो। आपको कोई कुछ भी दे आप सिर्फ उसे दुआ दो, दुआ लो तो सहज विजयी बन जायेंगे। ऐसी मधुर शिक्षाओं भरे वरदानी महावाक्य सुनते जरूर अटेन्शन देकर हर एक अपनी निवारण स्वरूप स्थिति बनायेंगे।

अब तो बापदादा यही चाहते हैं कि मेरा एक-एक बच्चा मेरे समान बने। जो संस्कार बापदादा के समान नहीं हैं, उन्हें बिल्कुल टच न करे। जैसे देह और देह के सम्बन्धों की सीढ़ी चढ़ चुके हो ऐसे बुद्धि में भी अब पुराने संस्कार इमर्ज न हों क्योंकि जैसे संस्कार होंगे वैसा स्वरूप होगा, इसलिए अपने पुराने संस्कार व पुरानी नेचर को बदल ईश्वरीय नेचर बनाओ। सदैव यही कोशिश करो कि हमारी चलन द्वारा कोई को भी दुःख न हो। मेरी चलन, संकल्प, वाणी, हर कर्म सुखदाई हो - यह है ब्राह्मण कुल की रीति, इसी से ही सबकी दुआयें मिलेंगी। इसके लिए अपने आप से दृढ़ प्रतिज्ञा करो कि जो भी पुराने संस्कार व व्यर्थ संकल्प उत्पन्न होते हैं, उस व्यर्थ की क्यु को अब सदा के लिए समाप्त कर, ड्रामा की भावी पर मुझे एकरस स्थेरियम रहना है। बोलो, हमारी मीठी मीठी बहिनें व भाई ऐसा ही अटेन्शन रख अन्तिम पेपर में पास होने की तैयारी कर ली है ना। वर्तमान समय बाबा अपने बच्चों से नई-नई सेवायें करवाते, सदा स्व-स्थिति और सेवा के बैलेन्स पर अटेन्शन खिंचवा रहे हैं।

बाकी बाबा के बेहद घर मधुबन में देश-विदेश के हजारों बच्चे भाग-भाग कर पहुंच रहे हैं। साकार मम्मा बाबा और बड़ी दादियों की यह तपस्या-स्थली सभी को चुम्बक की तरह अपनी ओर खींच रही है। सभी इस वरदान भूमि में आकर खूब रिफ्रेश हो रहे हैं। बापदादा के अवतरण दिन पर चारों ओर अव्यक्त वतन का वायुमण्डल स्वतः बन जाता है। ऐसे लगता जैसे सबके दिलों में बाबा की याद समाई हुई है। सभी साकार वतन में होते भी अव्यक्त वतन में अव्यक्त मिलन का अनुभव करते हैं।

अच्छा - आप सबका स्वास्थ्य ठीक होगा। दीपावली का पावन पर्व भी सभी बहुत प्यार से मनाते, एक दो को बधाईयां देते, मुख मीठा कराते हैं। यह भी यज्ञ स्थापना के यादगार दिन हैं। सबको इन पावन त्योहारों की बहुत-बहुत दिल से हार्दिक बधाई हो, सभी को स्नेह भरी याद...

ईश्वरीय सेवा में,  
बी. के. रतनमोहिनी



## ये अव्यक्त इशारे



### अब अपनी पुरानी नेचर व संस्कारों का परिवर्तन करो

1) आप सभी बच्चों का यह ब्राह्मण जन्म मरजीवा जन्म है। मरजीवा बनना अर्थात् अपनी देह से, मित्र सम्बन्धियों से, पुरानी दुनिया से मर जाना। जैसे कोई मर जाता है तो पिछले संस्कार खत्म हो जाते हैं। तो यहाँ भी पिछले पुराने संस्कार ऐसे लगने चाहिए जैसे और कोई के थे। हमारे नहीं। जैसे ब्राह्मण गन्दी चीज़ को नहीं छूते हैं वैसे पुराने संस्कारों से बचना है। छूना नहीं है।

2) देह की आकर्षण के संस्कार जो न चाहते हुए भी खींच लेते हैं, इस संस्कार को परिवर्तन करने के लिए मुख्य दो बातों का ध्यान रखो: 1- हर एक के चरित्र को देखना है और 2- चैतन्य (विचित्र-आत्मा) को देखना है। वर्तमान समय मुख्य यही पुरुषार्थ चाहिए।

3) अन्दर में जो भी पुराने भाव-स्वभाव का किचड़ा है, उसे परिवर्तन करने के लिए सच्चाई और सफाई का गुण धारण करो। मन्सा-वाचा-कर्मणा तीनों में बनावटी रूप न हो। सच्चाई अर्थात् जो करें, जो सोचें वही वर्णन करें। ऐसा जो सच्चा होगा वह सबका प्रिय होगा। सच्चे पर साहेब राज़ी होता है।

4) पुराने संस्कार तो मोटी चीज़ हैं अब पुराने संकल्प भी खत्म होने चाहिए। पुराने संस्कार उत्पन्न होने का कारण है विस्मृति। अपनी विस्मृति के कारण व्यर्थ बातें सहज को मुश्किल बना देती हैं। कोई न कोई संस्कारों में अगर यह देह का वस्त्र चिपका हुआ है अर्थात् तंग, टाइट है, तो उतर नहीं सकता। जब सभी संस्कारों से न्यारे हो जायेंगे तो फिर अवस्था भी न्यारी-प्यारी फरिश्ता समान हो जायेगी।

5) ब्राह्मण जीवन में कोई भी बात मुश्किल नहीं है, लेकिन अपने संस्कार, अपनी कमजोरियां मुश्किल के रूप में देखने में आती हैं। इसके लिए अपने को शमा पर इतने तक मिटाना है जो कहते हो “मेरे संस्कार” यह मेरापन भी मिट जाये। नेचर भी बदल जाये। जब हरेक की नेचर बदलेगी तब ब्रह्मा बाप समान अव्यक्ति पिक्चर्स बनेंगे।

6) जो बहुत समय के संस्कार होते हैं वही अन्त की स्थिति रहती है। लौकिक रीति से जब कोई शरीर छोड़ते हैं, अगर कोई संस्कार दृढ़ होता है, खान-पान वा पहनने आदि का तो पिछाड़ी

समय भी वह संस्कार सामने आता है इसलिए अभी से ये विस्मृति के अथवा हार खाने के संस्कार मिट जाने चाहिए। इसके लिए अपने आप से दृढ़ प्रतिज्ञा करो कि यह संस्कार, यह व्यर्थ संकल्प कभी भी उत्पन्न नहीं होने देंगे। जब ऐसी दृढ़ प्रतिज्ञा करेंगे तब अन्त में विजयी बनेंगे।

7) पुराने संस्कार, व्यर्थ संकल्प वा विकल्प के रूप में जब इमर्ज होते हैं तब बुद्धि में एक ही शब्द आता है कि यह क्यों हुआ, क्यों से व्यर्थ संकल्पों की क्यु शुरू हो जाती है। इस क्यु की समाप्ति के बाद ही सम्पूर्णता आयेगी। फिर वह क्यू लगेगी। जब क्यों शब्द निकल जायेगा तब ड्रामा की भावी पर एकरस स्थेरियम रहेगे।

8) जो अपने संस्कार बापदादा के समान नहीं हैं, उन्हें बिल्कुल टच नहीं करो। देह और देह के सम्बन्ध यह सीढ़ी तो चढ़ चुके अब बुद्धि में भी पुराने संस्कार इमर्ज न हों क्योंकि जैसे संस्कार होंगे वैसे स्वरूप होगा। तो जैसे बापदादा के गुण हैं, वैसे हूबहू वही गुण, वही कर्तव्य, वही बोल, वही संकल्प होने चाहिए फिर सभी के मुख से निकलेगा कि यह तो वही लगते हैं।

9) पुरानी बातें, पुराने संस्कार ऐसे अनुभव हों जैसे कि नामालूम कब की पुरानी बात है। ऐसे नाम निशान खत्म हो जाये। इसके लिए 1- अपनी बुद्धि से उपराम 2- संस्कारों से भी उपराम। “मेरे संस्कार हैं-” इस मेरे-पन से भी उपराम। मैं यह समझती हूँ, इस मैं पन से भी उपराम। जहाँ मैं शब्द आता है वहाँ बापदादा याद आये। जहाँ मेरी समझ आती है वहाँ श्रीमत याद आये।

10) जैसे साकार रूप के संस्कार “उपराम और साक्षी दृष्टा” के थे। यही साकार के सम्पूर्ण स्थिति के श्रेष्ठ लक्षण थे। इन संस्कारों में समानता लानी है। इन गुणों से सर्व के दिलों पर विजयी बनेंगे। जो संगम पर सर्व के दिलों पर विजयी बनता है वही भविष्य में विश्व महाराजन् बनते हैं।

11) प्लैन और प्रैक्टिकल को समान बनाने के लिए स्मृति में प्लेन, वाणी में भी प्लेन और कर्म में भी प्लेन अर्थात् श्रेष्ठता हो। कोई भी पुराने संस्कार का कहाँ दाग न हो। जब ऐसे प्लेन हो जायेंगे तब प्लेन और प्रैक्टिकल एक हो जायेंगे फिर सफलता एरोप्लेन की मुआफ़िक उड़ेगी।

12) कई बच्चे जब पुरुषार्थ नहीं कर पाते हैं तब नेचर पर दोष रखते हैं, कहते हैं हमारी नेचर ऐसी है, लेकिन नहीं। आप लोगों का तो कर्तव्य ही है नेचरक्युअर करना। वह नेचरक्युअर वाले फास्ट रखाते हैं। ऐसे आप बच्चे भी पुरुषार्थ में जो नुकसानकारक बातें हैं उनकी फास्ट रखो और प्रतिज्ञा करो कि यह करके ही छोड़ूंगा। बनकर ही छोड़ूंगा जब इतना निश्चयबुद्धि बनेगे तब विजयी बनेगे।

13) सर्व का सहयोगी बनने के लिए अपने पुराने संस्कारों को मिटाना पड़ता है, जब अपने संस्कार मिटायेगे तो दूसरे आपको स्वयं ही फालो करेगे। एक हम, दूसरा बाप। तीसरी बातें देखने में आयेंगी लेकिन देखते हुए भी न देखो, अपने को और बाप को देखो। स्लोगन यही याद रखो - कि “स्वयं को मिटायेगे लेकिन सर्व के सहयोगी बनेगे।”

14) जैसे वह बहुत पहले के साउन्ड को कैच करते हैं, वैसे आप अपने 5000 वर्ष पहले के दैवी संस्कार कैच करो। सदैव यह स्मृति में रखो कि मैं यही था और फिर बन रहा हूँ। जितना-जितना आदि और अनादि पवित्र संस्कारों को कैच कर सकेंगे उतना उसका स्वरूप बन सकेंगे।

15) आपस में दिलों के मिलन से संस्कारों को मिलाना है, इसके लिए कुछ मिटाना पड़ेगा, कुछ भुलाना पड़ेगा, कुछ समाना पड़ेगा – तब यह संस्कार मिल जायेंगे। यह है अन्तिम सिद्धि का स्वरूप। जब एक अनेकों को सम्पूर्ण संस्कार वाले बना दो, सभी के संस्कारों में बापदादा के संस्कार देखने में आयें तब प्रत्यक्षता के नगाड़े बजेगे और समाप्ति होगी।

16) ब्राह्मणों की नेचुरल नेचर सदा सर्व प्राप्ति की है अर्थात् ब्राह्मणों के आदि अनादि संस्कार विजय के हैं, सम्पन्न बनने के हैं। पश्चाताप के संस्कार ब्राह्मणों के नहीं यह क्षत्रियपन के संस्कार हैं। सूर्यवंशी सदा सर्व प्राप्ति सम्पन्न स्वरूप है।

17) बाप समान नेचर अर्थात् सदा वरदानी, सदा उपकारी, सदा रहमदिल। इस नेचर को अपना लो तो मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। नेचर (प्रकृति) का सुख लेने के लिए अपनी ओरीजनल अनादि नेचर को अपनाओ। नेचुरल नेचर अर्थात् अनादि संस्कार। यदि देह-भान की नेचर के वशीभूत रहते हो तो बार-बार हिम्मतहीन बन जाते हो। जो स्वयं भी वर्णन करते कि समझते भी हैं, चाहते भी हैं लेकिन मेरी नेचर है। यह भी देह भान की, देह की प्रवृत्ति है।

18) ब्राह्मण जीवन का नेचुरल स्वभाव-संस्कार ही योगी जीवन, ज्ञानी जीवन है। जीवन अर्थात् निरन्तर, सदा। 8 घण्टा जीवन है, फिर 4 घण्टा नहीं – ऐसा नहीं होता। आज 10 घण्टे के योगी बने, आज 12 घण्टे के योगी बने, आज 2 घण्टे के योगी बने, वो योग लगाने वाले योगी हैं, योगी जीवन वाले योगी नहीं।

19) जब नेचर ही ज्ञानी-योगी की होगी तो धारणा भी नेचुरल होगी। बार-बार पुरुषार्थ नहीं करना पड़ेगा कि इस गुण को धारण करूँ, उस गुण को धारण करूँ। लेकिन पहले फाउन्डेशन के समय ही ज्ञान, योग और धारणा को अपनी जीवन बना दी इसलिए यह तीनों सब्जेक्ट ऐसी आत्मा की स्वतः और स्वाभाविक अनुभूतियां बन जाती हैं। उन्हें सहज योगी, सहज ज्ञानी, सहज धारणा-मूर्त कहा जाता है।

20) समय प्रमाण, सरकमस्टांश प्रमाण, समस्या प्रमाण कई बच्चे पुरुषार्थ द्वारा अपने लक्ष्य और लक्षण को समान भी बनाते हैं, लेकिन यह नेचुरल और नेचर हो जाये, उसमें अभी और अटेन्शन चाहिए। चाहे आकारी फरिश्ता, चाहे निराकारी निरन्तर, नेचुरल नेचर हो जाये – इसका मूल आधार है निरहंकारी बनना। इसके लिए व्यर्थ वृत्ति, व्यर्थ वायब्रेशन स्वाहा कर दो तो नेचुरल योगी और नेचर में फरिश्ता बने ही हुए हो।

21) जैसे देह-अभिमान में आना नेचुरल हो गया है। ऐसे देही-अभिमानी अवस्था नेचुरल और नेचर हो जाये। तो जो नेचर होती है वह स्वतः ही अपना काम करती है, सोचना नहीं पड़ता है, बनाना नहीं पड़ता है, करना नहीं पड़ता है लेकिन स्वतः हो ही जाती है। ऐसे विशेषता के संस्कार नेचर बन जायें और हर एक के दिल से, मुख से यही निकले कि इसकी नेचर है ही विशेष आत्मा के विशेषता की।

22) किसी की नेचर रमणीक है तो स्वतः ही रमणीकता चलती रहती है। उसको पता भी नहीं पड़ेगा कि मैंने क्या किया? कोई कहेगा तो भी कहेंगे कि मैं क्या करूँ, मेरी नेचर है। तो विशेषता की भी ऐसी नेचर हो जाये। कोई पूछे इनकी नेचर क्या है? तो सबके दिल से निकले कि इनकी नेचर है ही विशेषता की। साधारण कर्म की समाप्ति हो जाए।

23) ब्राह्मण जन्म की विशेषता को नेचुरल नेचर बनाना – इसको ही सहज पुरुषार्थ कहा जाता है। सिर्फ एक विशेष आत्मा हूँ – इस स्मृति स्वरूप में स्थित हो जाओ तो बाप समान बनना अति सहज अनुभव करेंगे क्योंकि स्मृति स्वरूप सो समर्थी स्वरूप बन जाते हैं।

24) बापदादा के पास बेहद की अखुट प्रॉपर्टी है, जिसे कोई भी ले सकता है लेकिन यह अधिकार लेने के साथ-साथ अधीनता के संस्कार को छोड़ना पड़ता है और जब छोड़ने की बात आती है तो अपनी कमजोरी के कारण इस बात में रह जाते हैं और कहते हैं कि छूटता नहीं। फिर दोष संस्कारों को देते कि संस्कार नहीं छूटता। छोड़ने से छूट जायेंगे इसलिए कहा जाता है “छोड़ो तो छूटो”।

25) जब संस्कार धारण करने वाली चैतन्य शक्तिशाली स्वयं आत्मा हैं तो छोड़ना भी आत्मा को है, न कि संस्कार स्वयं छूटेंगे। तो यह जो कहते हो कि मेरे यह संस्कार हैं, स्वभाव है, आदत वा नेचर है। यह आदत बोलती है वा आत्मा बोलती है? इसलिए मेरी नेचर, मेरे संस्कार कहने के बजाए मालिकपन को धारण करो।

26) जैसे कमजोर संस्कार वा कोई अवगुण बहुतकाल से स्वरूप बन गये हैं, उसको धारण करने की कोई मेहनत नहीं करते हो लेकिन नेचर और नेचुरल हो गये हैं। उनको छोड़ने चाहते हो, महसूस करते हो यह नहीं होने चाहिए लेकिन समय पर फिर से न चाहते भी वह नेचर वा नेचुरल संस्कार अपना कार्य कर लेते हैं। ऐसे हर गुण, हर शक्ति निज़ी स्वरूप बन जाए। मेरी नेचर और नेचुरल गुण बाप समान बन जाएँ। ऐसा गुण स्वरूप, शक्ति स्वरूप, याद स्वरूप हो जाता है, इसको ही कहा जाता है बाप समान।

27) ब्राह्मण जीवन की नेचर है याद में रहना। ब्राह्मण जन्म लेना अर्थात् याद का बन्धन बांधना। जैसे वह ब्राह्मण जीवन में कोई न कोई निशानी रखते हैं - तो इस ब्राह्मण जीवन की निशानी है याद। याद में रहना नेचुरल हो इसलिए याद अलग की, सेवा अलग की, नहीं। दोनों इकट्ठे हों।

28) अब पुरानी आदतों से, पुराने संस्कारों से, पुरानी बातों से, पुरानी दुनियां से, पुरानी देह के सम्बन्धियों से वैराग्य चाहिए। इन्हें पीठ कर दो, हर कर्म करते हुए बीच-बीच में निराकार हो साकार में आने का अभ्यास करते रहो तो निरहंकारी और निर्विकारी बन जायेंगे।

29) जैसे कोई की विशेष नेचर होती है, उस नेचर के वश न चाहते भी चलते रहते हैं। कहते हैं यह मैं चाहती नहीं हूँ लेकिन मेरी नेचर है। वैसे निरन्तर सहजयोगी अथवा सहयोगी की नेचर बनाओ जो नेचुरल हो जाए। क्या करूँ, कैसे योग लगाऊँ यह बातें खत्म। हैं ही सदा सहयोगी अर्थात् योगी। इसी एक बात को नेचर और नेचुरल करने से भी सब सबजेक्ट में परफेक्ट हो जायेंगे।

30) संस्कार आटोमेटिक चाबी हैं जो आत्मा को चलाते रहते हैं। जैसे खिलौने को नाचने की चाबी देते तो वह नाचता ही रहता। अगर किसको गिरने की देंगे तो गिरता ही रहेगा। ऐसे जीवन में संस्कार भी चाबी के समान हैं इसलिए बाप के संस्कार ही अपने निज़ी संस्कार बनाओ। नहीं तो बहुत समय के पुराने संस्कार समय पर धोखा दे देंगे। पहले स्वयं को स्वयं के धोखे से बचाओ तो समय के धोखे से बच जायेंगे।

## (त्रिमूर्ति दादियों के अमृत वचन)

शिवबाबा याद है ?

ओम् शान्ति

मधुबन

**“ब्रह्मा बाप समान सम्पन्न, सम्पूर्ण और समान कैसे बनें”**

(गुल्जार दादी जी 2007)

बाबा को हम सदैव अपने सामने लाते रहें, बाबा की मूर्त में ही सम्पन्नता दिखाई दी। उसकी निशानी यह है कि स्वयं अशरीरी स्थिति में रहते थे। जब बाबा झोपड़ी में बैठते थे तो जब भी कोई बाबा के सामने जाता था तो बाबा की दृष्टि मिलते ही उनको पूछना भूल जाता था। एकदम बाबा की मूर्त से अशरीरीपन का अभ्यास ऑटोमेटिकली हो जाता था। तो साकार बाबा के सामने जाने से ही जो पूछना कहना होता था वो एकदम भुला करके ऐसे साइलेंस में अशरीरी स्टेज पर ले जाता था। यह प्रैक्टिकल अनुभव हम सभी ने किया है।

तो ज्ञान, शक्तियाँ और गुण तो हैं ही हमारा खजाना लेकिन चौथा बाबा ने अटेंशन दिलाया है - सबसे बड़ा खजाना है समय का। यह जो संगम का समय है - यह सबसे बड़ा खजाना है

क्योंकि कोई भी प्राप्ति, कोई भी कर्म समय अनुसार ही होती है। सुबह से लेकर हमारी जो भी दिनचर्या चलती है, वो समय के आधार पर चलती है। तो अगर समय के खजाने को सही रीति से विधिपूर्वक हम कार्य में लगाते हैं, तो हमारा सारे कल्प का भविष्य निश्चित हो ही जाता है क्योंकि यह संगम का समय, एक सेकण्ड 5 हजार वर्ष की प्रालब्ध का आधार है और कोई भी युग में हमारी प्रालब्ध नहीं बन सकती है। यही संगम का समय है जिसमें हमारी चढ़ती कला होती है। तो संगम समय पर राज्य-अधिकारी बनने से भविष्य में भी राज्य अधिकार निश्चित है ही फिर भक्तिकाल में पूज्य भी जरूर बनना ही है। भले द्वापर से गिरना शुरू करते हैं लेकिन हमारा पूज्य रूप तो कायम होता है। हम सब पूज्य जरूर बनने वाले हैं लेकिन जैसे यहाँ पुरुषार्थ में नम्बर हैं वैसे पूज्य में भी नम्बर हैं।

किसी-किसी बड़े-बड़े मन्दिरों में रोज़ हर कर्म का यादगार पूज्य के रूप में विधिपूर्वक पूजा जाता है और कहीं-कहीं ऐसा नहीं होता है। मन्दिरों में भी फ़र्क है। यह सारा फ़र्क इस संगम समय के पुरुषार्थ और प्राप्ति के ऊपर है। तो हमको देखना है कि सबसे बड़ा खज़ानों का आधार जो समय का खज़ाना है उसको हम कितना और कैसे यूज़ करते हैं? क्योंकि बाबा का है कि अब नहीं तो कब नहीं का पाठ पक्का करना है। एक सेकण्ड में कुछ भी हो सकता है, अचानक होगा तब तो माला में नम्बरवार होंगे। तो अचानक होना है, उसके कारण बाबा कहता है – संगम के एक-एक सेकण्ड का अटेन्शन हो। ऐसे ही साधारण रूप में इसे न गँवायें। समय का बहुत ध्यान रखना है इसके लिए अटेन्शन बहुत रखना पड़ेगा। ऐसे ही साधारण रीति से हमारा दिन बीता तो वहाँ भी साधारण ही बनना पड़ेगा। तो अपनी लगन में मगन और अपनी कमाई जमा करने में मस्त रहें।

ज्ञान माना यह नहीं कि सिर्फ़ हमने समझ लिया फिर भी बाबा कहते ज्ञानी तो बने लेकिन अभी पॉवरफुल नहीं बने हैं। बाबा से प्यार का सर्टिफिकेट तो हम सबने ले लिया, प्यार नहीं होता तो छोड़के आते क्यों? इसलिए प्यार में तो पास हैं। हम कोर्स करा सकते हैं, बड़ी-बड़ी जगहों पर भाषण कर सकते हैं, बुद्धि में सारी नॉलेज है रचना रचना की, लेकिन ज्ञान माना समझ। ज्ञान का अर्थ ही है समझ। तो समझ सिर्फ़ बोलना, ज्ञान वर्णन करना नहीं है। समझ हर कर्म में चाहिए, मानो हम संकल्प करते हैं उसमें भी समझ चाहिए – राइट है या रॉग है। हम फालतू को ही बढ़ाते रहते हैं, तो यह ज्ञान है क्या? समझ है क्या? तो सोच-समझ के काम करना है इसको कहते हैं ज्ञानी तू आत्मा। ज्ञान, गुण और शक्तियाँ... इसके लिए भी बाबा ने खास यह इशारा दिया है कि समय अनुसार, समस्या अनुसार जिस शक्ति की आवश्यकता है वो काम में आ जावे। तो ज्ञानी माना हर संकल्प, हर कर्म सोच समझकर करें। अगर समझ के आधार पर हम काम करेंगे तो हमारे कर्म कभी भी विकर्म नहीं होंगे, सुकर्म ही होते रहेंगे।

ऐसे ही योग की शक्ति के स्वरूप का भी हमें चेक करना चाहिए कि जब भी हम योग में बैठते हैं तो योग माना हमारा मन उसमें एकाग्रचित होना चाहिए, वो होता है या नहीं, होता है तो कितना समय होता है? ये चेक करने की बात है क्योंकि एकाग्रता हमारे योग की विशेषता है। जब और जहाँ हम अपने मन को लगाने चाहें, जितना समय हम मन को जिस स्टेज में ठहराने चाहें उसमें ठहरा सकें जिसको हम कहते हैं कन्ट्रोलिंग पॉवर, रूलिंग पॉवर। जिस समय जो लक्ष्य लेके बैठो तो जैसा वक्त वैसा काम होना चाहिए अर्थात् पढ़ने के समय पढ़ाई पढ़ो, खेलने के समय खेल खेलो। तो यह भी हमें चेक करना है कि योग माना मन एकाग्र हो और हमारा मन जितना एकाग्र रहता है उसमें विशेष

प्राप्ति यह होती है कि हमारा निर्णय बहुत अच्छा होता है।

तो योग माना हमारे मन की एकाग्रता। अगर मन में प्राप्ति नहीं होती है, मानो फरिश्ते रूप में जो हल्केपन का अनुभव होना चाहिए, मन के संकल्प का भी और शरीर भान का भी हल्कापन, अगर वो नहीं होता है तो क्या हम कहेंगे कि हम फरिश्ते के अनुभव में रहे? इसलिए योग में यह चेक करना है कि जो संकल्प में लक्ष्य लेके बैठे वो हमारा पूरा टाइम चला या योग के साथ बीच-बीच में युद्ध भी चली? चली तो उसको योग में एंड नहीं करेंगे। जैसे 15 मिनट योग हुआ और 15 मिनट युद्ध हुई, तो ऐसे ही गिनती की जायेगी।

तो आत्म-अभिमानि बनके बाबा को याद करना बहुत इज़ी है, जिसे आत्म-अभिमानि बनके बाबा को याद करने की आदत नहीं होगी, उसको बाबा की याद ज्यादा समय नहीं ठहरेगी क्योंकि आत्मा का कनेक्शन परमात्मा से है। तो बाबा जिस विधि से योग करने को कहते हैं, उस विधि से हमारा योग हो तो योग की शक्ति जमा हो सकेगी और अगर योग की शक्ति थोड़ी-भी कम है तो खज़ानों से भरपूरता की खुशी वा शक्ति फील नहीं होगी। युद्ध चलती रहेगी, मनन चलता रहेगा वो सब होता रहेगा लेकिन यथार्थ न होने कारण वर्तमान सन्तुष्टी नहीं होगी और भविष्य प्रालब्ध भी जमा नहीं होगी।

इसी रीति गुणों के लिए भी बाबा कहते हैं - हमारी चलन से, हमारे सम्बन्ध-सम्पर्क से किसको भी गुणों की फीलिंग आये। जैसे ये बहुत शान्त रहते हैं, बातों में नहीं आते हैं, यह रमणीक रहते हैं, यह थोड़ा गम्भीर रहते हैं, यह सब पता तो पड़ता है। तो इसी रीति से भी हम देखें एक तो हमारा जो भी कर्म होता है वो हर गुणों से सम्पन्न होता है? चलते-फिरते मुझे अन्तर्मुखता के गुण की फीलिंग आती है? कोई काम नहीं है उस समय मैं एकदम बिल्कुल अन्तर्मुखी हो जाऊं तो यह अभ्यास है? हमारे गुण-स्वरूप को देख दूसरे में गुणों को धारण करने की प्रेरणा आती है, उमंग-उत्साह आता है तो यह हो गया गुण दान। तो मैं अपने सम्पर्क द्वारा गुण दान कर रह रहा हूँ/कर रही हूँ? ये चेक करो। तो ज्ञान, गुण, शक्तियाँ और समय.. यह चारों ही खज़ाने जो हैं, उससे अगर हम भरपूर रहें तो सम्पन्नता की स्टेज के अनुभवी हो गये। अगर इन चारों में से कोई भी एकाध खज़ाना कम है या नहीं है तो हम सम्पन्नता के स्टेज का अनुभव नहीं कर सकेंगे। कभी-कभी करेंगे नेचुरल नहीं होगा।

ऐसे ही बाबा कहते हैं इन खज़ानों को जमा करने का साधन क्या है? हम अपने पुरुषार्थ से खज़ाने जमा करते हैं। दूसरा है – हम जो एक दो को स्वमान देते हैं, स्वमान में रहते हैं तो उस निःस्वार्थ सेवा द्वारा हम पुण्य का खाता जमा करते हैं। और एक दो के साथ सेवा में भी निःस्वार्थ रहते हैं, बेहद में रहते हैं तो हमें

दुआयें मिलती हैं। तो एक है अपने पुरुषार्थ से, दूसरी हैं दुआयें, तीसरा है पुण्य। यह तीन प्रकार से हम अपने खज़ानों को जमा कर सकते हैं। तो यह चेक करो। इसकी चाबी है निर्माण और निमित्त भाव। तो सम्पन्नता को हम इन बातों से चेक करें। निमित्त भाव में मैं-पन और मेरापन खत्म हो जाता है क्योंकि करावनहार बाबा है, मैं तो ट्रस्टी हूँ। सिर्फ घर-गृहस्थी वाले ही ट्रस्टी नहीं हैं। कोई भी हमारी ड्यूटी है तो भी हम ट्रस्टी हैं, मालिक तो हमारा बाबा है हम निमित्त हैं। तो निमित्त भाव में निर्माणता भी आती है। उनकी वाणी भी निर्मल होती है। तो एक निमित्त भाव में यह तीनों प्राप्तियाँ होती हैं। तो निमित्त भाव खज़ाने जमा की चाबी है। तो खज़ानों को जमा करके सम्पन्नता को धारण करना है, उसके लिए यह अटेंशन हमको रखना है।

फिर है सम्पूर्णता, यह सभी बातें अगर हमारे में हैं, सर्व खज़ाने हमारे पास जमा हैं तो नेचुरल है हमारे में सम्पूर्णता आयेगी। तो कर्म में जब हम आते हैं तो निमित्त भाव, निःस्वार्थ भाव हो, दूसरा अगर हम अपने को सम्पूर्ण बनाते हैं, तो अशरीरी और डबल लाइट का अनुभव करें। बीच-बीच में मैं अशरीरी आत्मा हूँ, इस अभ्यास को करना बहुत जरूरी है क्योंकि अन्त में हमें अशरीरी होकर घर जाना है। तो हमें अपनी अवस्था को चेक करना है। सम्पूर्णता माना सब खज़ाने सम्पूर्ण पूरे हों, परसेन्टेज ठीक हो। तो अनुभव के ऊपर आप अटेंशन ज्यादा दो। अनुभवी बनों तो कभी भी नीचे ऊपर नहीं हो सकते हैं। चाहे कितना भी कोई गिराने की कोशिश करे लेकिन अनुभव की अथॉरिटी वाला अपने अनुभव में रहता है। तो इसी रीति से सम्पूर्णता की दो स्टेज हमने सुनाई एक अशरीरी भव के वरदान को प्रैक्टिकल में लायें। दूसरा फरिश्ता, डबल लाइट अनुभव में आयें। जो भी भिन्न-

भिन्न प्रकार का बोझ आता है वो फरिश्ते रूप में बिल्कुल डबल लाइट बन जाये। तो यह है सम्पूर्णता की स्टेज।

तीसरी बात है समानता, वो तो सभी जानते हैं बाबा के समान बनना है। हमारा वायदा है हम आपके समान बनके ही शरीर छोड़ेंगे। अभी से समानता लाते रहेंगे तो बाबा जैसा समानता लाना, इसके लिए बाबा जिस विधि से चला वो विधि 100 प्रतिशत राइट है या वो रास्ता राइट है तब तो मंजिल पर पहुंचा अर्थात् अव्यक्त फरिश्ता बन गया। तो बाबा का रास्ता ही सही है तब तो मंजिल पर पहुँचेंगे। तो हम बाबा को फॉलो करने वाले हैं, कदम पर कदम रखने वाले हैं। तो जो भी हम संकल्प करें वो पहले बाबा से टेली करें। बाबा ने किया है ऐसा संकल्प? यह चलता ही है, यह होता ही है, यह रॉयल अलबेलापन आता है। तो हमें अभी इन सब बातों से हटके बाबा के समान हमको करना है। दूसरे को फॉलो तो करना ही नहीं है।

तो हमको बाबा समान बनना है, तो जो संकल्प करते हैं वो देखो बाबा ने यह किया, तो वो करो, नहीं तो नहीं करो। बस। बाबा ने जो कर्म किया, बाबा ने जो एक्टिविटी चलाई, तो बाबा ने क्या किया वो फॉलो फादर करना है, बस। और कुछ सोचने की जरूरत ही नहीं है। बाबा ने नहीं किया, मुझे नहीं करना है। बाबा ने किया है मुझे करना है। नया रास्ता बनाना ही नहीं है। कदम पर कदम उठाना है तो बहुत इज़ी है। तो ऐसे सम्पन्नता, सम्पूर्णता और समानता में ब्रह्मा बाबा जैसा बनना है। वास्तव में प्यार उसको कहा जाता है जो उसकी चलन हो, जो उसकी रूचि हो मेरा भी ऐसे हो। तो ऐसे हम अटेंशन देंगे तो क्या बन जायेंगे? तीनों क्वालिफिकेशन आ जायेंगी। सम्पूर्णता भी आयेगी, सम्पन्नता भी आयेगी और समानता भी होगी। अच्छा – ओम् शान्ति।

दादी जानकी जी के अनमोल वचन (धारणायुक्त क्लास)

**पावरफुल याद के लिए सेकेण्ड में फुलस्टॉप लगाओ और शान्ति के सागर में समा जाओ**

**(2006)**

आज बाबा ने कहा है घर को याद करो। हम आये कहाँ से, जायेंगे कैसे.. कितना स्पष्ट बाबा ने बताया है। वहाँ आत्मा बिन्दी मिसल है, यहाँ आकर शरीर धारण किया। वहाँ कितनी जगह चाहिए यहाँ शरीर के साथ रहने के लिए कितनी जगह चाहिए। अखण्ड ज्योति महत्त्व में आत्मायें बिन्दी मिसल हैं। इतनी सब आत्मायें जाकर वहाँ रहती हैं। घर की वह स्मृति इमर्ज करें। बाबा हमारा गाइड है वह हमको पावन बनाकर ले जायेगा, गाइड के पहले बाबा लिबरेटर है, यहाँ दलदल से छुड़ाता है, दुबन से

निकालता है। एक भक्ति मार्ग की दुबन, दूसरी माया की कीचड़, उससे निकाला है।

घर जाना है तो ऐसा पावन बनना है, जैसा पतित-पावन बाबा है। वह सुप्रीम है, इतनी सारी नॉलेज मिली है। जैसे रथवान (ड्राइवर) आराम से मंजिल तक ले जाते हैं, हम अपना ड्राइवर तो बन सकते हैं, कम से कम आगे पीछे की लाइट और ब्रेक तो ठीक हो। लक्ष्य है एक तो टाइम पर पहुंचना है, दूसरा अपनी लाइन पर चलना है। अगर बीच-बीच में और बातों में बुद्धि

जायेगी, इधर उधर देखेगा, पिया हुआ होगा, बुद्धि में टेन्शन होगा तो कहीं न कहीं एक्सीडेंट करेगा। हमारा भी अगर एक्सीडेंट होता है, चलते-चलते अपसेट होते हैं, तो अपने से और औरों से कान्फीडेंट निकल जाता है फिर दिलशिकस्त हो जाते हैं। तो कम से कम घर जाने तक आराम से भी चलें और सुस्ती में भी न रहें, सदा फ्रेस रहें, टेन्शन फ्री रहें, घर जाना है उसकी तैयारी है। करना था वह कर लिया, बाकी समा लिया, सफल कर लिया। घर जाने वाला ऐसा ही करेगा ना।

बाबा ने स्वदर्शन चक्रधारी ऐसा बनाया है, घर जा रहे हैं तो पावन बनकर जा रहे हैं, शान मान से जा रहे हैं। सजनी बनकर साजन के साथ जा रहे हैं, बराती बनकर नहीं जा रहे हैं। धर्मराज का डर नहीं है, सतधर्म, सत राज्य की स्थापना के निमित्त है। बाबा ने हम बच्चों की पालना करने के लिए, पढ़ाने के लिए कितना सहन किया है। मेरे बच्चे हैं, कितनी उम्मीदें रखकर हमें पालना दी, पढ़ाया, सब कुछ दिया है। हम लोगों का बेगरी पार्ट का इतना अच्छा अनुभव है, कैसे एकॉनामी से चलना सिखाया है।

बाबा जब साकार में थे तो कभी कार में नहीं चढ़े। एक ही ड्राइवर था, एक ही टैक्सी थी, वही माउण्ट आबू से आबूरोड लेकर आता था। हमारे बाबा ने क्या किया, हमारे कारण समर्पण हुआ, सफल किया। बच्चे तुम फिकर मत करो बाबा बैठा है। कभी हम कहते बाबा बिन्दी को कैसे याद करूं, बाबा कहते बच्ची इसमें पूछना क्या, सेकण्ड में फुलस्टॉप। यह भी कोई क्वेश्चन है। ज्ञान सागर बाप मिला है डीप चले जाओ तो इतनी शान्ति पैदा होती है, ऐसा कोई न कोई रत्न निकल आता है जो पावरफुल याद में ले जाता है।

पावरफुल याद हमारी ऐसी हो जो किसी की याद आ नहीं सकती। ब्रह्मा बाबा हमारा इंजन है, उसके बिगर गाड़ी कैसे

चलेगी। हमको आगे ले जाने के लिए जवाबदारी उठाई है, 84 जन्म ही हम कैसे सुखी रह सकते हैं वह सब सिखा रहा है। अभी सिर्फ दुःख सुख से न्यारे हो जाओ। कोई प्रकार का दुःख नहीं हो सकता, कुछ भी हो जाए। ब्रह्मा का मुख है पर पढ़ाता कौन है, कौन हमें देख रहा है, कौन इसमें बात कर रहा है, हमारी बातें सुन भी रहा है। जो मन की बात है एक सेकण्ड में सुनाओ, बाबा कहेगा बच्चे सत्य नारायण की कथा इसको ही कहा जाता है। सच से बेड़ा पार। कहाँ जायेंगे? घर जाना है। सच्चाई से बेड़ा पार है। निश्चय के बल से निश्चित रहे हैं। आत्मा हूँ, परमात्मा की सन्तान हूँ, बुद्धि में और कुछ है ही नहीं। संगमयुग है घर जाना है।

आज फिर बाबा ने कहा है सर्विसएबुल बच्चा बनना है। कुमारी वह जो 100 ब्राह्मण से उत्तम हो। उत्तम कुमारी वह जो 100 ब्राह्मण बनाकर तैयार करके दिखाये। इच वन टीच वन वाली चींटी मार्ग की सेवा नहीं करनी है। एक 100 ब्राह्मण न बनावे तो ब्रह्माकुमारी कैसी। दूसरा बाबा कहते सर्विसएबुल वह जो भीष्म पितामह जैसे को तीर मारे। फिर महावीर कौन? जो प्रवृत्ति में रहते भी बिल्कुल न्यारे, डिटैच हैं, कमल फूल समान रहते हैं।

तो भाग्यविधाता बाबा ने ऊंच पद पाने के लिए बड़ा भारी चांस दिया है। निश्चय का बल वैजयन्ती माला में ले आता है। तो पहले वैजयन्ती माला में आकर गले का हार बनूँ फिर घर जाऊँ। सेवायें तो हुई पड़ी हैं। बाबा का ध्यान सर्विसएबुल बच्चों पर जाता है। अगर मेरे ऊपर बाबा का ध्यान नहीं गया तो बाबा का बनकर क्या किया! मैं भगवान का ध्यान करूँ वह मेरा ध्यान रखे। जिसका भगवान ध्यान रखता है, वह पेशेन्ट नहीं है। बाबा के याद की शक्ति अन्दर से मुस्कराना सिखाती है, चेहरे पर चिंता का चिन्ह न हो, निश्चित भावी बनी पड़ी है तुम काहे का सोचते हो। अच्छा - ओम् शान्ति।

## (दादी प्रकाशमणि जी के अमृतवचन) अपनी जीवन मर्यादा सम्पन्न बनाओ

1) हमारे संगठन का सूत्र है एकमत। एक मत का आधार है फेथ। जब आपस में एक दो में फेथ रखते हैं तो सहयोग अवश्य मिलता है। आपका कार्य सो मेरा कार्य। फेथ के पीछे मैं और तू, तेरा और मेरा सब समाप्त हो जाता है। फेथ रहे तो कभी भी अभिमान नहीं आयेगा। आपकी महिमा सो मेरी महिमा। आपकी बड़ाई सो मेरी बड़ाई इसलिए हम अपने समान साथी को इतना रिगार्ड दें जो वह आपेही हमें दे, कहना न पड़े, यह

भी मर्यादा है।

2) हरेक की विशेषताओं को देखना है। हरेक में बाबा ने कोई न कोई खूबी जरूर भर दी है। बड़ी बड़ाई बाबा की है, मेरी नहीं। सदैव अपने सामने लक्ष्य हो बाबा। बाबा ने हमें निमित्त बनाया है।

3) लॉ उठाना, टोन्ट कसना, टोक देना, यह मेरा काम नहीं है। मैं कभी भी अपने हाथ में लॉ नहीं उठा सकती। हमें बाबा

जो सेवा देता उसे प्राण देकर करनी है, यह हमारा लक्ष्य हो। फेथ को तोड़ने वाला कांटा है रीस। तो मुझे आत्माओं से रीस नहीं करनी है रीस करो तो बाबा से क्योंकि हमें बाप समान बनना है।

4) ईर्ष्या करना मंथरा का काम है। यह वायदा करो कि मैं मंथरा नहीं बनूँगी। ईर्ष्या अथवा विरोध भावना दूसरे की निंदा करायेगा। ईर्ष्या करना, यह रावण की मत है। बाप की नहीं।

5) हरेक की बात का भाव समझना है, स्वभाव को नहीं देखना है। अगर किसी की गलती दिखाई भी देती है तो बाबा ने हमें समाने की शक्ति भी दी है। कभी एक की बात दूसरे से वर्णन नहीं करना है। भूल सुनो, लेकिन उसे वहीं पर सुनी अनसुनी कर दो। भूल को अन्दर रखने से वायब्रेशन खराब होता है। दूसरे की भूल को अपनी भूल समझो।

6) अपनी स्थिति को सदैव सुखमय रखो। कभी भी तंग दिल, उदास दिल नहीं बनना है। कोई झूठा अपमान करेगा कोई सच्चा। दुनिया की टक्करें अनेक आयेंगी लेकिन हमें उदास नहीं होना है। पत्थर भी पानी की लकीरें खा-खाकर पूजनीय बनता है। तो हमें भी सब कुछ सहन करके चलना है। हलचल को समाप्त करने का साधन है - बाबा से बातें करना। बाबा के पास जाओ तो बाबा आपेही कदमों में बल भर देगा।

7) मुझे किसी भी आत्मा पर डिपेन्ड नहीं करना है। आत्मा पर डिपेन्ड करने से बैलेन्स बिगड़ जाता है। बाबा पर डिपेन्ड करो। एक दो का आधार लेकर चलना बिल्कुल गलत है। मुझे तो साथी चाहिए, सहयोग चाहिए.. नहीं। मेरा साथी एक बाबा है। मैं बाबा से ही सहयोग लूँ।

8) दूसरों को सन्तुष्ट करना - यह बहुत बड़ा पुण्य है। इससे हमारी आत्मा को बल मिलता है। किसी के गुणों पर मोहित नहीं होना है। सदा बाबा को आगे रखो। बाबा को आधार बनाओ तो किसी में भी फसेंगे नहीं।

9) हमारा संसार बाबा है इसलिए कभी भी अन्दर में यह भावना नहीं आनी चाहिए, यह मेरा स्टूडेन्ट, यह तेरा। किसी भी प्रकार का स्वार्थ न हो। स्वार्थ अधीन बना देता है। किसी देहधारी में स्नेह जाता है माना स्वार्थ है। इस स्वार्थ से ईश्वरीय मर्यादाओं का उल्थन होता है इसलिए साकार बाबा ने हमेशा हमें स्नेह दिया लेकिन स्वार्थ का स्नेह नहीं दिया। तो जैसे हमारा बाबा निःस्वार्थी था वैसे निःस्वार्थी बनो। तो सबसे न्यारे और प्यारे बन जायेंगे।

10) ऐसा कभी नहीं सोचना है कि मेरा कोई सहारा नहीं है। लेकिन विघ्नों से घबराओ नहीं। विघ्न भल कितना भी बड़ा हो लेकिन अपने संकल्प से कभी भी बड़ा नहीं करो। जड़ को समझकर बीज को काटो। जड़ क्या है उसको समझो।

11) माया से डोन्टकेयर करना ठीक है, आपस में नहीं। जो आपस में डोन्ट केयर करते उनकी जबान पर लगाम नहीं रहता। जो आता वह बोल देते, यह स्वभाव भी डिससर्विस करता है।

12) जिद्द का स्वभाव ही ज्ञान में बहुत विघ्न डालता है। जिद्द वाले अपना और दूसरों का नुकसान करते हैं। जहाँ जी हाँ का स्वभाव है वहाँ सब फूल बरसाते, दुआयें देते, जहाँ जिद्द है वहाँ पानी के मटके भी सूख जाते हैं।

13) हम निमित्त बनने वाले बच्चों का कभी मूड आफ नहीं होना चाहिए। अगर मूड आफ करके किसी को मुरली सुनाते, गद्दी पर बैठते तो बहुत बड़ा पाप चढ़ता है।

14) अपने बड़े से कभी भी ना उम्मीद नहीं बनना है। सदा स्वमान में रहना है। ऐसे कभी नहीं सोचो यह तो मेरे पुराने संस्कार हैं। यह सोचना भी उसकी पालना करना है। पुराना संस्कार झूठा भोजन है। फिर क्या उस झूठे भोजन का भोग बाबा के सामने रखेंगे। मेरा तो दिव्य संस्कार हो, ईश्वरीय संस्कार हो। बहुत समय से पाले हुए संस्कार हैं उन सब संस्कारों को जीरो देने का दृढ़ संकल्प करो। रियलाइज कर उन्हें खत्म करो। व्यर्थ संकल्प तभी खत्म होंगे जब व्यर्थ संस्कार खत्म होंगे। हमने नई गोद ली, हमारा नया जन्म है। हम ब्रह्माकुमार हैं तो यह परिवर्तन करो।

15) कोई भी किसी में पुरानी आदत हो, प्लीज उसे समाप्त करो। बाबा की लगन, बाबा की मस्ती उसी धुन में रहो। अपने को दुआओं के आधार पर चलाओ। बाबा की दुआयें लेते चलो। मुझे हर आत्मा से दुआ जरूर मिलनी चाहिए। दुआयें हमारा प्यार हैं, प्यार ही हमारी दुआयें हैं। जहाँ सर्व का मेरे से, मेरा सर्व से प्यार है वहाँ मेरे बाबा की दुआयें हैं। इससे ही मुझ आत्मा की उन्नति है। यह हमारा अन्तिम जन्म, अन्तिम घड़ी है, किसकी हमारे ऊपर दुआ नहीं है तो उससे किसी भी तरह दुआयें जरूर लेना है।

16) हम बच्चे जो बाबा के पास स्वाहा हुए हैं उनमें अनुमान, मूड आफ, परचिन्तन, ईर्ष्या, द्वेष आदि की रस्सियाँ नहीं होनी चाहिए। इन रस्सियों को भी इस यज्ञ में स्वाहा करो। यही सच्चा मंगल मिलन है।

17) जहाँ नियम है वहाँ संयम है। जहाँ कायदा है वहाँ फायदा है। ईश्वरीय मर्यादा ही हमारा स्वधर्म है। सबसे प्रेम करो, सबका सम्बन्ध एक बाबा से जुटाओ, स्वयं से नहीं। हल्का व्यवहार मत करो। गम्भीर रहो। इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय का नियम है - दूरबाज़, खुशबाज़ रहो.. हंसी से बात न करो। काम से काम बस... ओम् शान्ति।